e-ISSN No. 3107/6564

भाग 02 / अंक 05 / मई - 2026
e-ISSN No. 3107/6564

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)

ISBN No. 978-93-343-1931-6

Contact to us - E-mail: editorinchief@naso.org.in / website: www.naso.org.in

e-ISSN No. 3107/6564

डॉ. भास्कर दुबे
मुख्य संपादक
ediotorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग, SHUATS,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –
डॉ. भास्कर दुबे
पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका
पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) 230124
कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007
Website – www.naso.org.in
E-mail – editorinchief@naso.org.in
Contact – 9936902749 / 7068708058

e-ISSN No. 3107/6564

पूर्वी उत्तर प्रदेश में किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) की वर्तमान स्थिति:

किसानों का ज्ञान, दृष्टिकोण एवं चुनौतियाँ

डॉ. गोविन्द मल्ल
सहायक प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा
डॉ. राम मनोहर लोहिया पी.जी. कॉलेज, इटवा
जनपद सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश

भारत में कृषि क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। आज भी लगभग आधी से अधिक आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। किन्तु अधिकांश किसान छोटे एवं सीमांत वर्ग के हैं, जिनके सामने उत्पादन लागत में वृद्धि, गुणवत्तापूर्ण कृषि आदानों की अनुपलब्धता, विपणन संबंधी कठिनाइयाँ, भंडारण सुविधाओं का अभाव तथा उत्पादों का उचित मूल्य न मिलने जैसी अनेक समस्याएँ हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए किसान उत्पादक संगठन (Farmer Producer Organization – FPO) की अवधारणा विकसित की गई, जिसका उद्देश्य किसानों को सामूहिक रूप से संगठित कर उनकी आय बढ़ाना तथा कृषि को लाभकारी बनाना है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश कृषि की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ धान, गेहूँ, गन्ना, आलू, दलहन, तिलहन, सब्जियाँ तथा फल प्रमुख रूप से उत्पादित किए जाते हैं। इस क्षेत्र में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक होने के कारण FPO किसानों के लिए एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। वर्तमान समय में अनेक FPO सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं, किन्तु इनके समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी हैं। किसानों का ज्ञान स्तर, संगठन के प्रति उनका दृष्टिकोण तथा उनकी सक्रिय भागीदारी FPO की सफलता को निर्धारित करते हैं।

किसान उत्पादक संगठन किसानों द्वारा गठित एक पंजीकृत संस्था है, जिसका उद्देश्य किसानों की सामूहिक शक्ति को बढ़ाना तथा कृषि व्यवसाय को लाभकारी बनाना है। FPO के माध्यम से किसान सामूहिक रूप से कृषि आदानों की खरीद, उत्पादन, प्रसंस्करण, भंडारण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग तथा विपणन का कार्य करते हैं। इससे उत्पादन लागत कम होती है तथा किसानों को बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त होता है। भारत सरकार ने वर्ष 2020 में 10,000 नए FPO गठन योजना प्रारम्भ की, जिसके अंतर्गत देशभर में किसान संगठनों को तकनीकी, वित्तीय एवं प्रबंधकीय सहायता प्रदान की जा रही है। पूर्वी उत्तर प्रदेश भी इस योजना से लाभान्वित होने वाले प्रमुख क्षेत्रों में शामिल है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में FPO की वर्तमान स्थिति

पूर्वी उत्तर प्रदेश के वाराणसी, गाजीपुर, जौनपुर, आज़मगढ़, बलिया, मऊ, देवरिया, गोरखपुर, कुशीनगर, भदोही, मिर्ज़ापुर, चंदौली, सोनभद्र, बस्ती, संत कबीर नगर तथा

e-ISSN No. 3107/6564

सिद्धार्थनगर जैसे जनपदों में अनेक किसान उत्पादक संगठन सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

इन FPO का गठन मुख्यतः निम्न क्षेत्रों में किया गया है -

- धान एवं गेहूँ उत्पादन
- सब्जी उत्पादन
- आम एवं अमरूद की बागवानी
- आलू उत्पादन
- दुग्ध उत्पादन
- मधुमक्खी पालन
- मशरूम उत्पादन
- जैविक खेती
- मसाला एवं औषधीय फसलें

अधिकांश FPO छोटे एवं सीमांत किसानों को संगठित कर कृषि व्यवसाय को आधुनिक स्वरूप प्रदान कर रहे हैं।

FPO से किसानों को प्राप्त होने वाले लाभ

1. सामूहिक खरीद

बीज, उर्वरक, कीटनाशक एवं कृषि यंत्र सामूहिक रूप से खरीदने पर लागत कम होती है।

2. बेहतर बाजार उपलब्धता

किसानों को सीधे व्यापारियों, कंपनियों एवं प्रसंस्करण इकाइयों से जोड़कर बेहतर मूल्य दिलाया जाता है।

3. तकनीकी जानकारी

कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा आधुनिक खेती की तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

4. सरकारी योजनाओं का लाभ

FPO के माध्यम से किसानों को विभिन्न सरकारी योजनाओं, अनुदानों एवं बैंक ऋणों की जानकारी तथा सुविधा मिलती है।

5. मूल्य संवर्धन

प्रसंस्करण, पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग के माध्यम से उत्पादों का मूल्य बढ़ाया जाता है जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है।

FPO सदस्यों का ज्ञान स्तर

किसी भी संगठन की सफलता उसके सदस्यों के ज्ञान पर निर्भर करती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में किए गए विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि FPO सदस्यों का ज्ञान स्तर मध्यम से उच्च श्रेणी का है, किन्तु सभी किसानों में समान स्तर की जानकारी नहीं पाई जाती।

अधिकांश किसानों को निम्न विषयों की जानकारी होती है -

- उन्नत कृषि तकनीक
- गुणवत्तापूर्ण बीजों का उपयोग
- संतुलित उर्वरक प्रबंधन
- सरकारी योजनाएँ
- सामूहिक विपणन
- फसल बीमा
- कृषि यंत्रीकरण

जबकि निम्न विषयों में जानकारी अपेक्षाकृत कम पाई जाती है -

- ई-नाम (e-NAM)
- डिजिटल मार्केटिंग
- निर्यात गुणवत्ता मानक
- वित्तीय लेखांकन
- ब्रांडिंग
- प्रसंस्करण उद्योग
- मूल्य श्रृंखला (Value Chain)

ज्ञान स्तर बढ़ाने के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं।

किसानों का दृष्टिकोण (Attitude)

पूर्वी उत्तर प्रदेश के अधिकांश किसान FPO के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

किसानों का मानना है कि -

- सामूहिक प्रयास से बेहतर लाभ मिलता है।
- बाजार में सौदेबाजी की क्षमता बढ़ती है।
- कृषि आदान कम कीमत पर उपलब्ध होते हैं।
- नई तकनीकों को अपनाने में सुविधा मिलती है।

- सरकारी योजनाओं तक पहुँच आसान होती है।
- किसानों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

हालाँकि कुछ किसानों में अभी भी निम्न धारणाएँ देखने को मिलती हैं -

- संगठन की सदस्यता से तत्काल लाभ नहीं मिलता।
- बैठकों में समय अधिक लगता है।
- प्रबंधन की प्रक्रिया जटिल है।
- नेतृत्व कुछ सदस्यों तक सीमित रहता है।

FPO के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

1. जागरूकता की कमी

कई किसान FPO के वास्तविक उद्देश्य एवं लाभों से पूर्णतः परिचित नहीं हैं।

2. पूंजी की कमी

अधिकांश FPO सीमित कार्यशील पूंजी के कारण बड़े स्तर पर व्यवसाय नहीं कर पाते।

3. विपणन समस्याएँ

उचित बाजार एवं खरीदारों तक पहुँच अभी भी सीमित है।

4. भंडारण सुविधाओं का अभाव

वैज्ञानिक गोदाम एवं कोल्ड स्टोरेज की कमी के कारण किसानों को कम कीमत पर उत्पाद बेचना पड़ता है।

5. प्रसंस्करण इकाइयों की कमी

यदि स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित हों तो किसानों की आय कई गुना बढ़ सकती है।

6. डिजिटल तकनीक का सीमित उपयोग

अधिकांश किसान ऑनलाइन विपणन एवं डिजिटल भुगतान प्रणालियों का पर्याप्त उपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

7. प्रशिक्षित प्रबंधन का अभाव

कई FPO में व्यवसायिक प्रबंधन, लेखांकन एवं विपणन विशेषज्ञों की कमी है।

8. सदस्य सहभागिता

कुछ किसान केवल नाममात्र के सदस्य बने रहते हैं तथा संगठन की गतिविधियों में सक्रिय भाग नहीं लेते।

ज्ञान एवं दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

- शिक्षा स्तर
- आयु
- भूमि जोत का आकार
- सामाजिक सहभागिता
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी
- कृषि प्रसार सेवाओं से संपर्क
- मोबाइल एवं इंटरनेट का उपयोग
- आर्थिक स्थिति
- नेतृत्व क्षमता

जिन किसानों ने नियमित प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा कृषि विभाग एवं कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क बनाए रखा, उनमें ज्ञान स्तर एवं सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक पाया गया।

FPO को मजबूत बनाने के लिए सुझाव

1. प्रत्येक ग्राम स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
2. नियमित प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
3. डिजिटल कृषि एवं ई-मार्केटिंग का प्रशिक्षण दिया जाए।
4. महिला एवं युवा किसानों की भागीदारी बढ़ाई जाए।
5. बैंकों से आसान ऋण सुविधा उपलब्ध कराई जाए।
6. कोल्ड स्टोरेज एवं प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना की जाए।
7. प्रत्येक FPO के लिए प्रशिक्षित मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) एवं लेखाकार उपलब्ध कराए जाएँ।
8. स्थानीय कृषि विश्वविद्यालयों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों से तकनीकी सहयोग बढ़ाया जाए।
9. स्थानीय उत्पादों की ब्रांडिंग एवं पैकेजिंग विकसित की जाए।

e-ISSN No. 3107/6564

10. किसानों को निर्यात एवं गुणवत्ता मानकों का प्रशिक्षण दिया जाए।

FPO और ग्रामीण विकास

FPO केवल कृषि उत्पादन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाते हैं। इनके माध्यम से ग्रामीण युवाओं को रोजगार, महिलाओं को आत्मनिर्भरता, कृषि आधारित लघु उद्योगों को बढ़ावा तथा स्थानीय स्तर पर मूल्य संवर्धन की संभावनाएँ बढ़ती हैं। इससे पलायन में कमी आती है और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियाँ तेज होती हैं।

निष्कर्ष

पूर्वी उत्तर प्रदेश में किसान उत्पादक संगठन (FPO) छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए कृषि विकास का एक प्रभावी मॉडल बनकर उभरे हैं। इन संगठनों ने किसानों को सामूहिक शक्ति प्रदान कर उत्पादन लागत कम करने, आधुनिक तकनीकों को अपनाने, बेहतर बाजार उपलब्ध कराने तथा आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। फिर भी जागरूकता की कमी, वित्तीय संसाधनों का अभाव, विपणन समस्याएँ, प्रबंधन कौशल की कमी तथा डिजिटल तकनीकों का सीमित उपयोग जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं।

यदि किसानों के ज्ञान स्तर को प्रशिक्षण, प्रसार सेवाओं एवं सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से बढ़ाया जाए तथा FPO को वित्तीय एवं तकनीकी रूप से सशक्त बनाया जाए, तो ये संगठन पूर्वी उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश में कृषि को लाभकारी, टिकाऊ एवं आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भविष्य की कृषि व्यवस्था में FPO किसानों की आर्थिक समृद्धि, ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के प्रमुख आधार स्तंभ सिद्ध होंगे।